

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রী মেল্পপত্তূর্ নারায়ণভট্টতিরি ঝিরচিতম্
॥শ্রীমন্নারায়ণীয়ম্ ॥

দশক - ৮০

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते कृष्णाय परब्रह्मणे नमः
श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्रीमन्नारायणीयम् ॥

दशक - ८०

स्यमन्तुकोपाख्यानम्

सत्राजितसुब्रमथ लुक्करदकलक्कं
दिर्यं स्यमन्तुकमणिं भगवन्नयाचीः।
ततकारणं बहुरिधं मम भाति नूनं
तस्याञ्ज्जां त्वयि रतां छलतो विबोदुम् ॥ १ ॥

अदन्तं तं तुभ्यं मणिररमनेनान्नमनसा
प्रसेनसुदत्राता गलभुरि बहन् प्राप मृगयाम्।
अहन्नेनं सिंहो मणिमहसि मांसत्रमरशात्
कपीन्द्रसुतं हत्वा मणिमपि च बालाय ददिवान् ॥ २ ॥

शशंसुः सत्राजिदिरमनु जनान्तरां मणिहरं
जनानां पीयूषं भवति गुणिनां दोषकणिका।
ततः सर्वज्जोपि स्वजनसहितो मार्गणपरः।
प्रसेनं तं दृष्ट्वा हरिमपि गतोभूः कपिगुहाम् ॥ ३ ॥

भरन्तुमरितकयन्नतिरयाः स्वयं जाम्बरान्
मुकुन्दशरणं हि मां क इह रोद्धुमित्यालपन्।
विभो रघुपते हरे जय जयेत्यलं मुष्टिभि-
श्चिरं तव समर्चनं व्याधित भक्तचूडामणिः ॥ ४ ॥

बुधराथ तेन दत्तां नररमणीं
वरमणिं च परिगृह्णन्।
अनुगृह्णन्मुमागाः सपदि च
सत्राजिते मणिं प्रादाः ॥ ५ ॥

তদনু স খলু ব্রীলালোলো ঝিলোলঝিলোচনাং
 দুহিতরমহো ধীমান্ ভামাং গিরৈর পরার্পিতাম্।
 অদিত মণিনা তুভ্যং লভ্যং সমেত্য ভরানপি
 প্রমুদিতমনাস্তস্যৈবাদান্মণিং গহনাশযঃ ॥ ৬ ॥

ব্রীলাকুলাং রমযতি স্বযি সত্যভামাং
 কৌন্তেযদাহকথযাথ কুরুন্ প্রযাতে।
 হী গান্দিনেযকৃতরম্গিরা নিপাত্য
 সত্রাজিতং শতধনুমণিমাজহার ॥ ৭ ॥

শোকাত্ কুরুনুপগতামরলোক্য কান্তাং
 হস্বা দুতং শতধনুং সমহর্ষযস্তাম্।
 রস্তে সশঙ্ক ইর মৈথিলগেহমেত্য
 রামো গদাং সমশিশিক্ষিত ধাতরাস্ত্রম্ ॥ ৮ ॥

অক্রূর এষ ভগবন্ ভরদিচ্ছযৈর
 সত্রাজিতঃ কুচরিতস্য যুযোজ হিংসাম্।
 অক্রূরতো মণিমনাস্তরান্ পুনস্তরং
 তস্যৈর ভূতিমুপধাতুমিতি ব্রুবন্তি ॥ ৯ ॥

ভক্তস্তরযি স্থিরতরঃ স হি গান্দিনেয-
 স্তস্যৈর কাপথমতিঃ কথমীশ জাতা।
 ঝিঞ্জানরান্ প্রশমরানহমিতুদীর্গং
 গর্ভং ধ্রুং শমযিতুং ভরতা কৃতৈর ॥ ১০ ॥

যাতং ভযেন কৃতরম্ফুতং পুনস্ত-
 মাহূয তদ্বিনিহিতং চ মণিং প্রকাশ্য।
 তত্রৈর সুব্রতধরে ঝিনিধায় তুষ্যন্
 ভামাকুচাস্তশযনঃ পরনেশ পাযাঃ ॥ ১১ ॥
